

१६ नं ॥ ॥ सकादिया मिलिमानाहम ॥

रहजगेरा रहन्या वारुदधाना १ जिनसिपाना १ कारतोस रहन्याठा
१ रसदगोडाम १ धोक्रागोडाम १ इनठाउमा दोहोरो तालचा
लगाइ १ साचो सुपत्यारले भन्याकाठाउमा १ साचो जिन्नालिन्यासि
त राघनु भित्रपसदा निस्कदा पालेले आगपोलागरिहेनु सोधोलनुप
होर अनह वमोजिम आमदानि घर्च गर्नुपर्दा श्रीकस्याण्डरइनचीफ
सगविन्तिपारि साजिवस्त्रा मानिस लीगे आमदानि जोलेघनुपन्या
कितावमा लेषि लिन्या दिन्याकोर साजिको समेत नाउलेषि सहि
छापगराइ सोवभोजिम वाटोकोस्याद चाहिन्यामा म्याद वाहेकगरि
१ दिनमा रपोटजाहेरगर्नु आफनु बदलिऊदा साबिकको तायदाति
किताव र आफनु पालामा आया गयाकामा आफनु सहिछापगरि
एकप्रति कागज हाकवाला लाइ बुझाइ भर्षाद्विनु सो तायदाति

सकादिया मिलिमानाहम ॥ १६ नं ॥ ॥ सकादिया मिलिमानाहम ॥

साकादिया मिलिमानाहम ॥ १६ नं ॥ ॥ सकादिया मिलिमानाहम ॥

मा पुष्पा जमिना नमा मि सती गाय विहं हस
हमिके पसधि आज सहत गधय विहं

६८ श्री विष्णु रत्न सौम्य
विष्णु देवी विलास सौम्य

ॐ नमः शिवाय योगव जायः जोगव सदाविभक्त

कमध्वसूतानि नाना गानसमूहचकना

ध्यायते नमः ॥ ॐ नमः शिवाय चक्रिकाय ३ ॥ ॐ

ॐ ॐ उग्रचन्द्रः चक्रिका चक्रिका चक्रिका चक्रिका

नमः ॥ ॐ ॐ ॐ काञ्चन पद्मसि नन्दनः स्व

रूपगन्धर्वनः ॐ ॐ ॐ दयावि ॐ मन्त्र

मिसा ॐ ॐ मानानर सुप्रजापति नमः ॐ जय

रविकयनसिद्धिचन्द्र नमः ॥ १ ॥ धुं धुं धुं

द्या जय पद्मलिन द्यालनः धर्मे जानादद्या ॥ ॥

ॐ

हैं हैं हैं हा स ज पं ति पु व न ध जि नः ऊं च लं ऊं
पालं ऊं ऊं ऊं ह न्नाथः सु कल ज न हि नं रा स्य
द हं पि ग म चंः हैं हैं हैं का ज ना द स कल ज न
हि नं सि द्वि च न्द न म स्तु ॥ २ ॥ वूं वूं वूं वा

म धालं शु म नि ह व न ना । सु फ पा ना ज ना जंः कैं कैं कैं
का ज च्च पं ध क नि न ध कि नं न स्य ह स्तु वि ग लः
वूं वूं वूं इ र्ग ज्प थ म नि च च जि नः न स्य द व स्य
र्यंः मं मं मं मं ग सि द्विः सु कल ह य ह जं सि द्वि
च न्द न म स्तु ॥ ३ ॥ उं उं उं का ज च्च र्प यः उ म

नि उ म उ मा उं य मा ना ज म स्ताः कैं कैं कैं का
ज धा जीः वूं वूं जि न ध् जि नं ध् ध् मा जी कु मा
जीः ध् ध् ध् ध् सु व र्ध् शु म नि पु व न ना का ल या
गं ति गु लः नं नं नं नी व र्च यः म म ह य ह ज धं सि द्वि चंः
न न म स्तु ॥ ४ ॥ जैं जैं जैं जा य च्च ध् ५ ५ धि ज

जा वि जं दी र्घ जि का क लालः पं पं पं पु न र्च य
स म य वि ज य नः सु ह र्द ह नि स हः सं ग्र म प्री म
जा नः ज य तु वि ज य नः गृ षि स हा ज का लिः
कौं कौं कौं का ज ना द ह ग व नि व ज द न धि
च न्द न म स्तु ॥ ५ ॥ हैं का जी का ल धा जी न न

नचयगिन मुखमडि जो जानि कहै का। लघोलः
नादः पचयगि रगिखाहा जयपिंग जाऊ पंक
जा ना रिया गः प्र प्र प्र प्र प्र प्र नः कामिनी नी
लक(०) का कालिका ल जागिः रगवनि वज
दः सिद्धि चंदन मस्तक ॥ ५ ॥ डी डी डी का ज
ग द गि रु वन नमि नैः धा ज धा जागि जः कैं कैं कैं
काल पूयः घृ घृ जि न घृ जि नैः धृ धृ मा। ज वृ मा
जीः धृ धृ धृ धृ सु व धृ सु म गि रु वन ना काल पा
जागि रु लः न न न नी वृ र्प म म ह य ह ज घः सिद्धि
चंदन मस्तक ॥ ७ ॥ डी डी का ज ना द प पः

जिन सहसा। जाम सहस्र क वालः खं खं खं खं खं प्र ह
जम ज जि मि रि मा मु रु मा सु (गता ॥ जं जं जं जं जं
माला रु वन वि र पि जा दी घं जि का कलालः द वी
उग्र चें डे रग वनि व द सिद्धि चंदन मस्तक ॥ १३
२०० नि शा न न का स क सा गु त मा फ ॥ ८ ॥ १०३
२२ उं न म ॥ गी चं रु का य ॥ व स्रा य नी व स्रा माः
वि शी व स्रा ग ले नि व द नी चू तु मु ज च तु व ॥ ॥
कैं चं तु व द पु सा ध नी ॥ चं तु मु जं वि व्या पि च
र्य ग प जा य नी ह स रं क वि मा न स्ताः मा मा जू पी
पि ता मा हि ॥ पृ ष्ठ कं जा ध्य मा ला च व ज दा त य र वि
गाः पि ता पृ ष्ठ ज ना द वी पी नां गी पी न वा स नी
पी ना प हा ज सं रु द्धा ॥ पी न गं धा नू ले पि नी उ द म

लागलवस्का प्रिया लगऊ वासिनीः पूर्वपीथीसि
नानिर्गुणवृक्षग किं न मासुने ॥ १ ॥ माह गवज
जी महादेवीः माह माया निजं जनीः महावृषस
मा अरुणस हा ॥ २ ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ मोहनी उवाच
ॐ अस्मन्नीवीरवेतालः वाको सि विस्तोत्रस्य श्रीवीर
वेतालः अघिरनुपपद्यन् श्रीवीरवेताल मोहनी
तगती स वार्थसं ववाचा सि धार्थे जपे विरोग
सत्रनासु मना कुर्यात् ॥ लोका ना मोह न सदा
इ सस्ता ना वसता विरस माया वाच सिद्धिदा ॥ १ ॥
॥ नमस्ते चितरुपाय विरवेताल मौरवमा
हा वीरवायु वेगं किं सदाः कामदायनी ॥ २ ॥ मोह

निः मोहन देहि मद्य मासे सका प्रियः माह मौरवरु
पायना सनासाय वैरिनी ॥ ३ ॥ वस्ताना वस्य कला
निस्तुभये नस्तुभये नः असमत वैरी विना
सायः काल दृष्टे न मास्य हं ॥ ४ ॥ जमने मारने
चेव तारो मोहन सदाः महामंक वृत्तासायः ना
न विज्ञान मेव च ॥ ५ ॥ कुरु सर्व मोहनार्थं यमु
तनाथाय वै नमः मौरवासन नाथायः वीर वीराय
वै नमः ॥ ६ ॥ पीतरुपाय देवायः वीरवेताल से नमः
नमो त्रैलोक्य नाथाय नाथ नाथाय वै नमः ॥ ७ ॥ महा
वायु वेगयः मृतनाथायः वै नमः दाकि नि सगति
को माये हं हं वीर वीर के ॥ ८ ॥ ममम मोहिनी वीरः

वै वै वै वा च वा ची कै ! इ दं स्तोत्र पठेत् ^{नी} कचि ते न सि
द्धि दै ती ॥ ८ ॥ य क वी स ति स्तोत्रे न नीत्यं नीत्यं सदा
पथे तः समाया वच ने सिद्धि वा य तु ल्य सदा वच ॥ १० ॥
गो प सिद्धि पु नः गो यं वा च वा चा य वा चि कै य स्मी न्य
स्मी न्न दा त वां गो पि त न पु का स य त ॥ ११ ॥ इ ति गो स
मा या वा सी द्वि मो ही नि वे ताल स्तोत्र समाप तः सु धो वा
अ रु धो वा सम दो षो न दि य ते ॥ १२ ॥ ॐ ॥

ASHA ARCHIVES
3659

ASHA ARCHIVES
3659

महाराष्ट्र

३६५९ ————— ३६५९ १२१३ १४ १५ १६

पुस्तक न्यायः

को स्यादासन भिडार मिच्छा दिनु ॥

१६ नं ॥ ॥ कुमारीवोक लगायोत भद्र वक्ति ज्ञापय गारि मा
रपगरि दिनाको कामगन्याहरुले इजारा अमानत गहको कति भ
पछि स्याहामा केडिकलम लेपियाको देखियो आवाज्या ठपोटहरु
मा लेपियाको रहेनछ अथवा आवाज्या ठपोट हरूमा लेपिसा
रहेछ स्याहामा लेपिन गयाको रहेनछ भन्दा यौटाकागजमा
मापछि चोरिप्राजाकालागि नलेप्याको ठहर्दै न गाफीली १ क
स्याउपन्या कागजमा स्याइ ज्ञापय मा गगरि दिनु यस्या
सक गयाकामा दगड जरिकाना पनि हुदैग ॥